आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2019
वर्ष 5, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2019, पृ. - 40-45

गोंड रामायणीः जनजातीय रामायण का विवेचनात्मक अवलोकन

प्रकाश त्रिपाठी*

भारत एक सांस्कृतिक विविधताओं का राष्ट्र है। यहाँ के प्रत्येक समुदाय, विशेषकर जनजाति समाज की अपनी सांस्कृतिक एवं धार्मिक विशेषताएँ हैं। परन्तु यह समाज भी भारतीय महाकाव्यों 'रामायण और महाभारत' के प्रभाव से अछूता नहीं है। यद्यपि रामायण से समानता रखने वाली कथाएं भी अधिकतर अपनी आधारभूमि के लिये स्थानीय संस्कृति, इतिहास, भूगोल तथा पर्यावरण को ही चुनती है। इन कथाओं में मुख्यतः उसी समाज की सौंदर्य–दृष्टि, परम्परायें, रीति रिवाज की छाप रहती है जिस समाज में ये गढ़ी गयी हैं। इन कथाओं में स्थानीय मान्यताओं के अलावा उस समाज में प्रचलित मिथकों, लोककथाओं, स्थानीय देवी–देवताओं तथा उनसे जुडी हुई कथाओं और अनुष्ठानों की एक गहरी छाप रहती है। लोक संस्कृति के अध्येता और विद्वानों का भी मत है कि रामायण और महाभारत से प्रेरित लोक–कथाओं और लोक–काव्यों कि संरचना में स्थानीय तत्वों का विशेष महत्व होता है। ये स्थानीय तत्व इन महाकाव्यों और आख्यानों का स्थानीयकरण कर इन्हें विविधता प्रदान करते है।

मानवशास्त्र के प्रांतीयता/संकीर्णता (Parochialisation) के सिद्धांत के अनुसार रामायण और महाभारत के कथानकों एवं घटनाओं का स्थानीयकरण कर किया जाता है, जिसमें कथा के पात्रों का नाम और संदर्भ तो वाल्मीकि या तुलसीदास द्वारा विरचित रामायण महाकाव्य का होता है परन्तु कथा के नायक, नायिका एवं अन्य चरित्रों का जन्म उसी समाज के भीतर दिखाया जाता है जिस समाज में उस कथा को रचा जाता है। अलौकिक और दैवीय पात्र भी स्थानीय समाज के अन्य मनुष्यों की तरह ही उस समाज में अवतरित होते हैं तथा उन्ही कि भांति अपना जीवन यापन करते हैं। इन चरित्रों के साथ समाज एक अंतरंग और घनिष्ठ सम्बंध स्थापित करता है और उन्हें अपने गाँव के बेटे, बेटी, दामाद, वधु, या अन्य सम्बन्धी के रुप में देखता है। इसके अलावा इनका कथानक अभिन्न रूप से स्थानीय नदी, नालों, पहाड, जंगल, इत्यादि से जुडा होता है। यह सारा का सारा घटनाक्रम लोक के अपने धरातल और भूमि में घटित होता है। स्थानीय भाषा, वेषभूषा एवं खान–पान इत्यादि

*प्रकाश त्रिपाठी इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

इस स्थानीयकरण में अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं और कथा पर अपनी अमिट छाप छोडते है। ये प्रक्रिया स्थानीय भूगोल से एक अटूट सम्बन्ध स्थापित करती है। गाँव के ताल, तालाब, पत्थर, पेड–पौधे, जंगल, रास्ते इत्यादि इस कथा जगत के चरित्रों एवं घटनाक्रम से न केवल अभिन्न रूप जुडते ही नहीं अपितु उसके साक्षात दश्ष्टा एवं साक्षी भी बन जाते हैं। स्थानीयकरण के अलावा इन कथाओं में अक्सर सम–सामयिकता के कई पहलु जुड जाते हैं और कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि सारा का सारा घटनाक्रम ही समकालीन है। लोक संस्कृति में कथा संरचना की प्रक्रिया में एक और तत्व अपनी महत्ता रखता है और वह है – कथा में संवर्धन एवं विस्तार। यह कथा संवर्धन एवं विस्तार नये संदर्भो के जुडने एवं कथा की घटनाओं पर गायक अथवा कथा वाचक की व्याख्या के माध्यम से किया जाता है अथवा मुख्य कथा के साथ कई उप–कथायें और घटनायें जोड ली जाती हैं। लोक में विचरती ऐसी ही एक कथा है 'गोण्ड रामायनी'। अगर यह कहा जाये तो अतिशयोक्ति नही होगी कि लोक रामकथाओं में गोंड रामायणी एक अनूठी और अद्वितीय कथा है जो स्वयं में विशिष्ट है।

गोंड भारत की सर्वाधिक जनसँख्या वाली जनजाति है जो मध्य भारत में पायी जाती है। इस समाज के अपने कथानक है जिसे गोंड रामायणी कहा जाता है। गोंड रामायणी का गायन परधान गोंड करते हैं जो अपने यजमान गोंड के यहाँ उनके आमंत्रण पर जाकर रात भर गोंड रामायणी का गायन करते हैं। गोंड रामायणी सात अध्यायों में बटा हुआ एक कथानक है इन सातों कथाओं का अपना नाम है। अतः गोंड रामायनी इन अलग–अलग कथाओं के नाम से भी गाई जाती हैं। गोंड रामायनी कभी भी पूर्ण रूप से एक ही बार में नहीं गायी जाती। इसके गायक, परधान गोंड, अपने यजमान, जो किसान गोंड के नाम से जाने जाते है, की रूचि के अनुसार कोई भी एक कथा को उठा लेते हैं और रात भर उसका गायन करते है। गोंड रामायनी की सात कथाओं के नाम इस प्रकार हैः– लछ्मन सत परीक्षा, लछमन और इन्दरकामनी, लछमन और तिरयाफूल, लछमन और मचलादाई, लछमन और रानी पुफै या, तथा लछ्मन और बिजुलदई एवं रामायनी की अंतिम कथा सीता बनवास। ये अंतिम कथा ही रामायण से एक प्रकार का संबंध रखती है, जिसमें लोक में एवं कुछ एक लिखित रामायणों में निहित प्रंसग सम्मिलित हैं , जैसे कि सीता द्वारा रावण का चित्र बनाना, रावण के चित्र का जीवंत हो उठना, लक्ष्मण एवं राम द्वारा उसका पुनः वध, एवं राम का रुष्ट हो सीता को त्यागना, वाल्मिकी के आश्रम में लव का जन्म एवं कुशा घास से कुश की उत्पत्ति, इत्यादि। ज्ञातव्य है कि इस कथानक के मुख्य नायक राम न होकर लक्ष्मण हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि जनजातीय रामकथा के नायक लक्ष्मण ही होते हैं, अतः यहाँ भी लक्ष्मण का नायक होना आश्चर्यजनक नहीं है। शायद इसीलिए गोंड रामायनी 'लछमन चरित' और 'लछमन सत परिच्छा' के नाम से भी जानी जाती है।

गोंड रामायनी के गायक परधान गोंड हैं। जो गोंडों के पारम्परिक पुरोहित, कथा वाचक और गोंड वंशावली एवं उनके इतिहास के संवाहक एवं संप्रेषक है। गोंडो की उत्पत्ति–कथा के अनुसार, शुरुआत में गोंड सात भाई थे। एक बार उनके मुख्य देवता बडा देव उनसे रुष्ट होकर साजा के पेड में लुप्त हो गए। बहुत सारे पूजा– अनुष्ठानों और बलि से भी वह प्रसन्न नहीं हुए। तब सबसे छोटे भाई ने खिरसरी के पेड की टहनी से एक बाना बनाया और साजा के पेड के सामने उसे बजाने लगा। बाने के सांगीत से रीझकर बडा देव पेड से निकल सातों भाइयों के सामने प्रकट हुए और उन्होंने छोटे भाई को वरदान दिया कि वह बाक़ी भाइयों का पुराहित बनकर रहेगा और उसे ही बाना बजाने एवं कथा कहने का अधिकार होगा। उसे खेत में काम करने की जरुरत ही नहीं होगी। बाकी के छः

भाई जो धान खेत में उपजायेंगे उसका एक हिस्सा छोटे भाई को देंगे। इसी से छोटे भाई का नाम परधान पडा और वह अपने बडे भाइयों का पुरोहित बन गया। तब से आज तक परधान गोंड तीन साल में एक बार किसान गोंड के यहाँ जा कर उनके घर में बाने पर गोंड कथाएं जैसे कि पंडवानी, गोंडवानी, रामायनी इत्यादि सुनाते हैं। उनके यहाँ पूजा पाठ करवाते हैं तथा मृतक आत्माओं का बडा देव में समाहित होने का अनुष्ठान (जिसे कुंडे मिलाना कहते हैं) इत्याकि संपन्न करवाते हैं। मृत्यु के बाद घर की शुद्धि भी वही करते हैं।

तीन साल में एक बार जब वह अपने मेहमानों के यहाँ जाते हैं तो इन तीन सालों में परिवार के जिन सदस्यों की मश्त्यु हो गयी हो उनकी सुख शांति के लिए रामायनी का गायन करते हैं। इसके अलावा जन्म और शादी ब्याह के अवसर पर भी रामायनी का आयोजन किया जाता है। गौरतलब है कि रामायनी के शुरुआत में गोंडों के सभी देवी देवताओं का आवाह्न किया जाता है। इन सब में बडा देव का स्थान सर्वप्रमुख है। वैसे भी बडा देव मश्त्यु संस्कारों से अभिन्न रूप से जुडे हैं। बडा देव, बूढ़ा देव, लिंगो देव गोंडों के प्रमुख देवता हैं। कालांतर में बडा देव और बूढ़ा देव एक दूसरे में विलय हो गए और पूछे जाने पर कभी तो दोनों को अलग अलग बताया जाता है और कभी एक ही माना जाता है। लिंगो देव से जुडी कथाएं भी मण्डला और डिन्डोरी के गोंडों में विस्मश्त हो चुकी हैं। गोंड रामायणी का नायक लक्ष्मण उनके प्रमुख देव बडा देव, बूढ़ा देव और लिंगों देव से बहुत सी समानतायें लिए हुए हैं।

पद्मश्री शेख गुलाब ने सन 1964 में पहली बार सम्पूर्ण गोंड रामायनी का मूल भाषा में संकलन कर प्रकाशित किया । इससे पहले वेरिएर एल्विन एवं श्यामराव हिवाले (1935) ने रामायनी का लक्ष्मण सत–परीक्षा वाला प्रसंग अपनी पुस्तक 'सॉग ऑफ़ द फ़ॉरेस्ट' (Song of the forest) में सम्मिलित किया था। सन 1993 में Anthropological Survey of India ने अपनी पुस्तक 'राम–कथा इन ट्राइबल एंड फोक ट्रेडिशन इन इंडिया' (Ram Katha in Tribal and Folk Tradition in India) में श्यामराव विहाले (1946) द्वारा संग्रहित कथा मछंदर केना को पुनः प्रकाशित किया (Singh and Datta 1993: 61 & 65) जो शेख गुलाब के संग्रह में मचलादाई के नाम से विद्यमान है। एल्विन वाले रूपांतरण में दी गयी कथा में लक्ष्मण अग्नि–परीक्षा में सफल होने के बाद धरती माँ के गोद में समा जाते हैं जहाँ उनकी भेंट एक नागकन्या बिजुलदई से होती है जिसे लक्ष्मण व्याह कर लाते हैं। परन्तु कथा के अंत में वह बिजली बनकर आकाश में लुप्त हो जाती हैं। यह कथा शेख गुलाब संकलित रामायनी में बिजुलदई कि कथा का ही एक रूपान्तर है।

यदि कथा के कुछ एक प्रसंगों को देखा जाये तो कथा की शुरुआत ही लक्ष्मण की सत की अडिगता से की जाती है और फिर इसी बात को आगे बढ़ाते हुए लक्ष्मण के महल का कुछ इस तरह से वर्णन किया गया है –

जिसके पहरा मा बारा गूड़ा चंदा सूरज,
तेरा गूड़ा ढलवाँपुर का दानव,
बाघ भालू के पहरा लगे हैं पंवर दुआर
बारा डाली भंवर माछी तेरा डाली कुतयार मांछी
चौदा डाली दुरगाछी पन्दरा डाली बिच्छी

सोला डाली बरैया भन्नानें भैया
ऐसे पहरा में लछमन रहथैं रे भाई कृ

अपने इस डुंडा महल में लक्ष्मण इस तरह से अपने सत की सुरक्षा में जी रहें हैं कि हर बारह कोस पर सूरज और चाँद के पहरे हैं, हर तेरहवें कोस पर ढलुवा दानव बैठा है। शेर और भालू महल के दरवाजों की सुरक्षा में बैठे हैं बारह डाली भर काटने वाली मक्खियाँ और तेरह डाली डसने वाली मधुमक्खियाँ और चौदह डाली भर कर लाल चीटियाँ महल की रक्षा कर रही हैं। पंद्रह जगह डंक उठाये बिच्छू। सोलह जगह काटने वाली बर्रैया। ऐसी पहरेदारी में लक्ष्मण बारह वर्ष की लम्बी गहन निद्रा में सो रहे हैं। अब उनके पलंग और बिछौने का वर्णन देखिये–

शीश नाग के खुरा लगे है,
धमना नाग के पाटी बने है,
रेशम के गुथना गुथे है,
बिच्छुन के खीला ठठे हैं
एक अजगर मुडेसा री दाई
मह मंडल नाग के भरे हैं रजैया,
चींटी साँप के बांधे है दुपट्टा,
हो ss जे लछमन सतलोकी रे भाई
हो ss ऐसे डुंडा महल मा लछमन तपसी तप कर रहें हैं।

रामायनी की भाषा न केवल समृद्ध और सजीव है, इसकी हर पंक्ति किसी चित्र के समान आँखों के आगे से गुजरती है। यह भाषा जितनी दृश्य परक है उतनी ही संकेतात्मक और प्रतीकात्मक भी। जिस प्रकार बडा देव/बूढ़ा देव साजा के वृक्ष में विराजमान हैं उसी प्रकार लक्ष्मण का डूँडा महल भी एक वृक्ष के तने में स्थित है। जिस प्रकार बडादेव बाने की आवाज पर जागृत होते है उसी प्रकार लक्ष्मण की निद्रा भी बाने के आग्रह पर ही टूटती है। जिस प्रकार बाने को बडादेव का ही रुप माना जाता है, उसी प्रकार अठारह बाजों से सजा लक्ष्मण का बाना बजाता शरीर भी एक प्रकार से बाजे की ध्वनि का ही प्रतीक मालूम होता है।

अठारह बाजों को शरीर से बाँध कर एक साथ बजाने वाला नायक गोंडी कथा जगत मे केवल एक लक्ष्मण ही नहीं है। गोंडो का एक और नायक है लिंगों देव। लिंगो देव की गाथा मंडला–डिन्डोरी के गोंडो में अब प्रायः लुप्त हो चुकी है। परंतु छत्तीसगढ़ में लिंगोदेव या लिंगों पैन अभी भी एक मुख्य देवता के रुप में पूजे जाते हैं। लिंगो देव की गाथा के कुछ अंश अब बडा और बूढ़ा देव की कथाओं से जुड गये है। लिंगो देव गाथा के कई रुपांतर संकलनकर्ताओं ने प्रकाशित किये हैं। इन में से कई रुपांतर एक दूसरे से काफी भिन्न जान पडते है और कुछ एक के बीच में काफी सामानता भी दिखती है। एल्विन ने अपनी पुस्तक 'मुडिया और उनके घोटुल' में इनमें से कई रूपान्तरों को एक जगह एकत्रित कर आठवें अध्याय *दि लीजेंड ऑफ़ लिंगो पेन* (the legend of Lingo - pen) में दिया है और अपने द्वारा संग्रहित कई अन्य रुपांतरो को भी इसी अध्याय में दिया है (Elwin 1947: pp. 225-265)।

गोंड रामायणी में संगीत का महत्व

गोंडों का संगीत से गहरा सम्बन्ध हैं। संगीत और ध्वनि, प्रकृति और मानव की जीवंतता का प्रतीक है। इसका जीवन और मृत्यु से गहरा सम्बन्ध है। संगीत का प्रकट होना जीवन के आविर्भाव से सम्बंधित है और उसकी अनुपस्थिति मृत्यु का सूचक। लिंगो बहुत तप करने के बाद महोदव से वरदान प्राप्त कर अपने अन्य गोंड भाइयों को गुफा से छुडाते हैं। कई बार वह ऐसा अपने संगीत गुरु हिरासुकां की मदद से भी करते हैं। संगीत की लहरें जब गोंड बच्चों को सुनाई देती हैं तो उनके अंदर बल भर जाता है और वह गुफा के मुँह पर रखी चट्टान को गिराते हुए बाहर भागते हैं। इस चट्टान के नीचे दबने से गोंडों के इस महान संगीतज्ञ की मृत्यु हो जाती है। संगीत के स्वर मौन हो जाते हैं और लिंगो देव गहन शोक में डूब जाते हैं। संगीत से जीवन और मृत्यु का यह सम्बन्ध इस प्रसंग में बहुत उम्दा तरीके से दर्शाया गया है। ये सम्बन्ध अनेकों कथाओं में परिलक्षित होता है चाहे वह कथाएं घोटुल से जुडी हों या बडा देव, लिंगो देव या बूढ़ा देव से। लिंगों ने गोंडो को न केवल गुफा से आजाद किया बल्कि उन्हें अलग अलग वंशों, कुलों, जातियों और उप जातियों में बांटा। आपस में शादी व्याह के तौर तरीके तय किये, उन्हें खेती करना सिखाया। घोटुल की प्रथा आरम्भ की और उन्हें गीत, संगीत और नृत्य की शिक्षा दी। लिंगो देव गोंडो के जनक और धर्मगुरु के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

लिंगो देव और बडा देव के चित्रण में काफी समानता दिखती है, और बहुत से प्रसंग दोनों ही चरित्रों से जुडी गाथाओं में पाए जाते हैं। दोनों संगीत के देवता हैं, दोनों का निवास स्थान संगीत के यंत्र में है। दोनों का सम्बन्ध जीवन और मृत्यु से है और दोनों गोंडों के छोटे भाई परधान से जुडे हैं। परधान गोंड भी अपने सात भाइयों में सबसे छोटा भाई है, और लिंगो देव भी सभी भाइयों में सबसे छोटे हैं। एक प्रकार से देखा जाये तो बडा देव, बूढ़ा देव और लिंगो देव एक दूसरे का प्रतिरूप बन कर उभरते हैं और साम्यानुमान (analogically) गोंड रामायनी में लक्ष्मण का चरित्र चित्रण इन तीनो देवताओं का प्रतिरूप ही कहा जा सकता है। इसी तर्क को अगर और आगे बढ़ाया जाये तो परधान गोंड को भी संभवतः इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

लक्ष्मण का महल साजा वृक्ष, गोंडों की गुफा और लिंगों देव के घोटुल के कई अभिप्रायों को अपने में शामिल किये हुए हैं। इसी प्रकार गोंड रामायण की सीता जी का चित्रण भी गोंडी धरातल पर ही खोजना होगा। कुछ एक प्रसंग जो लिंगो देव की कथा में उनके बडे भाइयों की पत्नियों से जुडे हैं, उनकी छाया गोंड रामायनी पर भी दिखाई पडती है। दूसरी तरफ उनके और लक्ष्मण के बीच का लगाव गोंड समाज में देवर भाभी के घनिष्ठ संबंधों की छाप लिए हुए है। यहाँ घोटुल परंपरा के कुछ नियमों की झलक, जो बडे भाई की पत्नी से सम्बन्ध रखते हैं, भी दिखाई देती हैं। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण है वह महल जहाँ सीता जी रहती हैं, महल का नाम है झिंझरी महल।

निष्कर्ष

भारत का शायद ही कोई समुदाय हो जो अपने आप को रामायण और महाभारत से ना जोडता हो, प्रत्येक क्षेत्र में कोई न कोई ऐसा मंदिर या स्थान अवश्य होता है जो रामायण या महाभारत से सम्बन्ध रखता है। चाहे पुरातात्विक प्रमाण हो या न हो, लोक में इन स्थानों का महत्व अवश्य रहता

है। इन लोक में प्रचलित कथाएं भले ही पुस्तकों में रूपांतरित ना हो पाई हों परन्तु इनका अपना महत्व है। इन्हीं स्थानीय ज्ञान और परम्पराओं की आराध्य हैं लोक–सरस्वती, जो अपनी कला एवं विद्या को पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से या रीति रिवाजों के माध्यम से अग्रसारित करती रहती हैं। इस प्रसारण के दौरान यह ज्ञान प्रणाली अपने निकटवर्ती ज्ञान–परम्परा से या तो प्रभावित होती हैं या प्रभावित करती हैं। जिसे मेरियट ने सार्वभौमिकरण (universalization) तथा स्थानीयकरण (parochialization) से समझाया है। गोंड रामायणी स्थानीयकरण का एक उदाहरण है जो यह दर्शाता है कि किस प्रकार वृहद् संस्कृति–परम्परा स्थानीय संस्कृति–परम्परा को आच्छादित कर लेती है तथा उसको अपना मुखौटा प्रदान कर देती है भले ही उसके मूल में स्थानीय कथानक अपने स्वरुप में रहे। गोंड रामायणी के सातों अध्याय की मूल घटनाएँ गोंड जनजातियों की लोक कथाओं का हिस्सा हैं जिनके पात्रों के नामों को बदल दिया गया है परन्तु उनका मूल, पहनावा, महल, दृश्य सभी वही है।

लोक–परम्पराओं में प्रचलित ऐसे कथानकों का संकलन एवं संग्रहण आवश्यक है, जिससे भारतीय संस्कृति की विविध परम्परा को समझा जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

फ्यूरेर–हेमीनडोरफ, क्रिस्टोफ. 1948, दी गौंडस ऑफ अदिलाबादः ए पर्सन कल्च्र इन डेक्कन, बुक माइथ एडं रीजुअल. लंदन. चैपमैन एडं हाल लिमिटेड.

हीवेल, समराव. 1946, दी प्रधानस ऑफ दी उपर नर्वदा वैली, बाम्बेः जियोफ्रे कम्बरलेज, आक्सफोर्ड यूनिर्वसटी प्रैस.

कौशल, मौली, आलोक भल्ला एडं रमाकर पंत (एडी.) 2015, रामकथा इन नेरैटिव, परफोरमेंस एडं पिक्टोरियल ट्रेडिशंस, नई दिल्लीः IGNCA एडं आर्यन बुक इन्टरनेशनल.

मरई ठाकुर कोमल सिंह, गोंडवाना भूखण्ड का प्रासंगिक कथावस्तु. भोपालः अखिल गोंडवाना गोंडी साहित्य परिषद.

रिचमेन, पोला (एडी.) 1992, मेनी रामयनाः दी डायवरसिटी ऑफ ए नेरैटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया.

सिंह, के. एस. एडं बीरेन्द्रेर नाथ दत्ता. 1993, रामकथा इन ट्राइबल एडं फोक ट्रेडिशंस ऑफ इंडिया. कलकत्ताः एन्ट्रोपोलिजिकल सर्वे ऑफ इंडिया एडं सीगुल बुकस.